REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

''सिहोर जिले में कार्यरत श्रमिकों की ऋण आवश्यकताओं का अध्ययन''

नितिका माहेश्वरी[१] , डॉ. कंचन श्रीवास्तव[२] , डॉ. मनीष दुबे[३]
[१]शोधार्थी , श्री सत्यसाँई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नॉलॉजी एण्ड मेडिकल साइंस सिहोर.
[२]निर्देशक
[३]सहनिर्देशक

प्रस्तावना :

जब आय के साधनों से पर्याप्त आय का अर्जन सम्भव नही हो पाता है और व्ययों एवं आवश्यकताओं की तीव्रता अधिक होती है कि विवशता ऋण का बोझ व्यक्ति पर बढता जाता है। ऐसे में निर्धन एवं श्रमिक वर्ग जिनकी आय का निश्चित साधन नही है। आय की नियमितता नहीं है। वे अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने कि लिए ऋण लेने को मजबुर हो जाते है। प्रस्तुत शोध में सिहोर जिले के श्रमिकों की ऋण आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया है। अर्थात उन्हे ऋण की आवश्यकता किन-किन कारणों से होती है एवं किन साधनो से वे ऋण प्राप्त करते है। शिक्षा , आवास ,भोजन एवं अन्य आवश्यकताओं की पुर्ती हेतु लधु एवं दीर्धकालीन ऋण मजदुरो द्वारा प्रायः लिये जाते है।

शोध प्रविधि :-

सिहोर जिले के श्रमिकों की ऋण ग्रस्तता का अध्ययन करने हेतु ३०० श्रमिको से विस्तृत चर्चा कर प्राथमिक समंक एकत्रित किये गये है एवं तालिका के माध्यम से इनका प्रदर्शन किया गया है।

शोध उद्येश्य :-

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सिहोर जिले के श्रमिक वर्ग की ऋण आवश्यकताओ का अध्ययन करना है। अतः प्रस्तुत शोध
(१) सिहोर जिले के श्रमिको की ऋण आवश्यकताओं एवं
(२) श्रमिको के ऋण लेने के स्त्रोत ज्ञात करने के उद्देश्य से किया गया है।

शोध सारांश :-

सिहोर जिले के श्रमिको से विस्तृत चर्चा कि गई और उनके द्वारा लिये गये ऋण की स्थिति ज्ञात की गई ऋण आवश्यकताओ एवं उनके स्त्रोत के बारे में जानकारी एकत्रित की गई यह ज्ञात हुआ है कि श्रमिको को ऋण की आवश्यकता आकस्मिक विपदा दीर्धकालीन उपभोग जैसे भूमि,भवन,वाहन आदि क्रय करने हेतु एवं दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ती हेतू ज्यादा लिया जाता है। ऋण आवश्यकताओ को निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है-

तालिका क्रमांक १
सिहोर जिले के श्रमिको द्वारा ऋण लेने के कारण

कारण	शिक्षा	आवास	व्यापार	वाहन	मकान,भूमि	अन्य कारण
श्रमिको की सख्या (३००)	२५	५६	२	२०	१८	१७६
प्रतिशत (१००)	८.३	१६.७	०.७	६.६	६	५८.७

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सिहोर जिले के श्रमिको में ८.३ प्रतिशत श्रमिक शिक्षा १६.७ प्रतिशत श्रमिक आवास ०.७ प्रतिशत श्रमिक व्यापार ६.६ प्रतिशत श्रमिक वाहन, ६ प्रतिशत श्रमिक भूमि एवं ५८.७ प्रतिशत श्रमिक अन्य कार्यो जैसे बीमारी, विवाह एवं अन्य कार्य हेतु ऋण लेते हैं।

तालिका क्रमांक २
श्रमिकों द्वारा ऋण लेने के साधन

साधन	साहुकारो से	बैंको द्वारा	अन्य साधन	कुल
श्रमिक सख्या	३५	१५६	१०६	३००
प्रतिशत	११.७	५३	३५.३	१००

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ११.७ प्रतिशत श्रमिक साहुकारों , ५३ प्रतिशत श्रमिक बैंकों, ३५.३ प्रतिशत श्रमिक अन्य साधनो जैसे मित्र, रिश्तेदारों, दुकानदारों आदि से ऋण प्राप्त करते है।

ऋणी श्रमिकों की समस्याएँ :-

श्रमिकों से साक्षात्कार के दौरान ज्ञात हुआ है कि श्रमिकों की मूल समस्या अनियमित आय है जिससे वे ऋण की किश्तों का भुगतान नियमित रूप से नहीं कर पाते और उनका ऋण भार बढता चला जाता है। बैंको से ऋण प्राप्त करने की दशा मे जटिल प्रक्रिया और अत्यधिक दस्तावेजों की आवश्यकता एक बड़ी समस्या है। बैंकों द्वारा ऋण प्राप्त न होने की दशा मे साहुकारों से ऋण लेने पर अधिक दर से ब्याज का भुगतान करना पड़ता है। ऐसे मे श्रमिको समस्याएं और अधिक बढ जाती है।

आवश्यक सुझाव :-

श्रमिकों को ऋण बोझ से मुक्ति दिलाने के लिये उनकी आय का नियमितीकरण सुनिश्चित करना होगा। क्योंकि पर्याप्त एवं नियमित आय ही ऋण आवश्यकताओं को कम कर सकती है। बैंकों द्वारा श्रमिक वर्ग को ऋण प्रदान करने हेतु विशेष शिविरो का आयोजन प्रभावी ढंग से करना चाहिए। श्रमिक वर्ग हेतु ऋण की ब्याज दरों मे विशेष छूट का प्रावधान होना चाहिए।

निष्कर्ष :-

श्रमिकों को अपने परिश्रम कार्य से आय तो पर्याप्त होती है और इतनी कि जो एक स्नातक भी प्रारम्भ में नहीं कमा सकता। पर्याप्त आय के बावजूद श्रमिकों का जीवन स्तर निम्न होता है क्योंकि व्यय की गलत प्रवृत्ति इनके जीवन स्तर को ऊँचा नहीं उठने देती। आधे से ज्यादा श्रमिक मादक पदार्थों का सेवन करते है। मादक पदार्थों पर श्रमिक अपनी आय का एक बहुत बड़ा भाग अपव्यय कर देते है।यदि श्रमिक अपनी आय को सुनियोजित रूप से उपयोग करें और अपव्यय की प्रवृत्ति पर अंकुश लगा दें तो निश्चित रूप श्रमिकों का जीवन स्तर ऊँचा उठ जायेगा। जरूरत है तो सिर्फ श्रमिकों को जागरूक करने

की, शिक्षित करने की और ये बताने की कि श्रमिक समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है और उन्हें सामाजिक विसंगतियों से बाहर आकर समाज में अपना स्थान पाना है। **साथ ही श्रमिको को ऋण बोझ से मुक्ति दिलाने के लिये उनकी आय का नियमितीकरण सुनिश्चित करना होगा। क्योकि पर्याप्त एवं नियमित आय ही ऋण आवश्यकताओं को कम कर सकती है।**

सन्दर्भ :-

भारतीय अर्थव्यवस्था – साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
इकानॉमिक टाईम्स
नईदुनिया

नितिका माहेश्वरी
शोधार्थी , श्री सत्यसाँई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नॉलॉजी एण्ड मेडिकल साइंस सिहोर.